शिक्षा का महत्व

मैरी क्यूरी की कहानी



हिंदी अनुवाद – अपूर्वा भाटिया

शिक्षा का महत्व

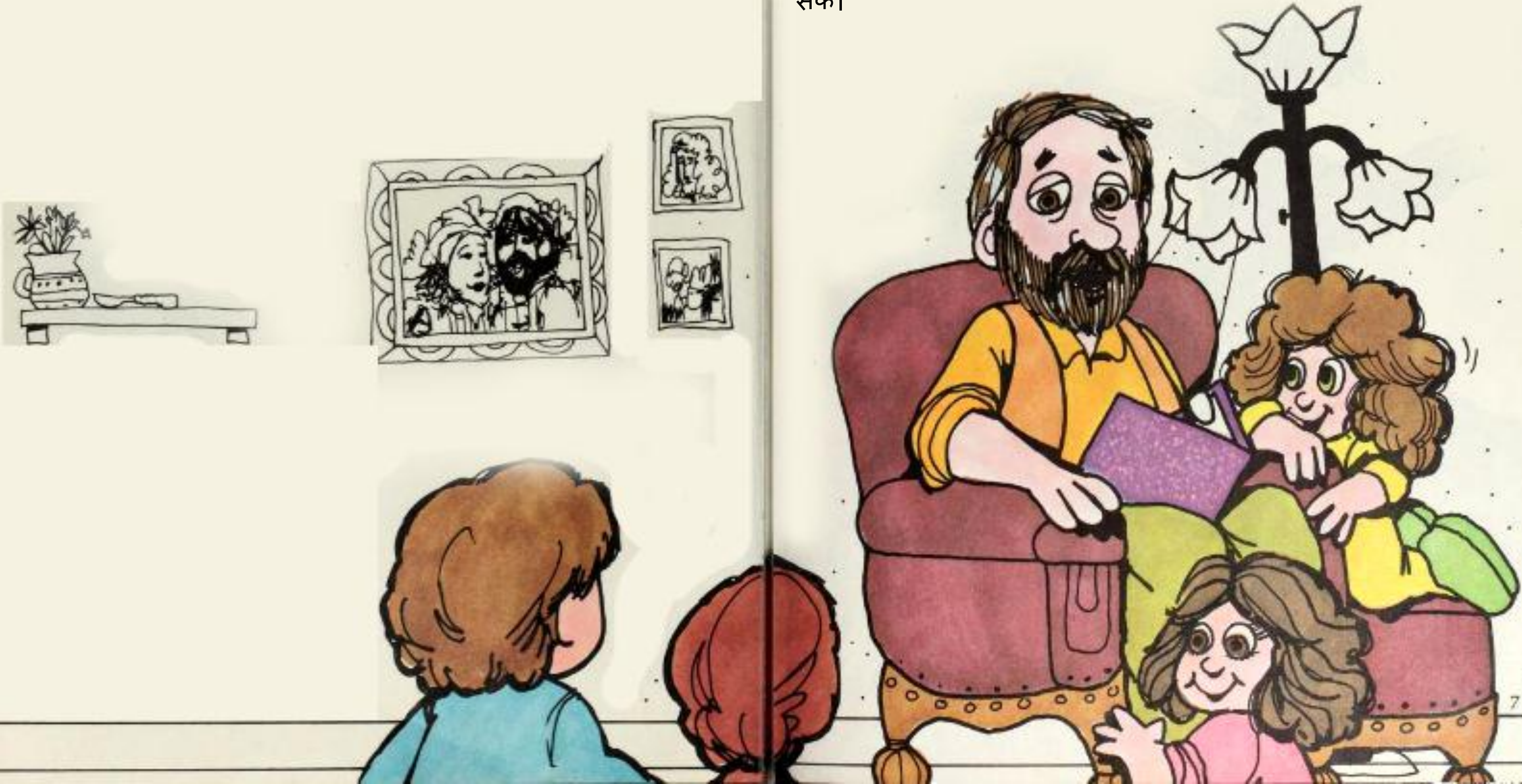
मैरी क्यूरी की कहानी





एक समय की बात है.... हमसे मीलों दूर पोलैंड देश के एक शहर वॉरसॉ में एक छोटी लड़की रहती थी। उसका नाम मर्या था। पोलैंड में मर्या का मतलब होता है मैरी, यानी की यीशु की माँ।

मर्या बाकी लड़कियों की तरह ही थी। वह और उसके भाई-बहन शाम को आग के पास बैठना पसंद करते और उसके माँ और पिता उन्हें ढेरों कहानियाँ पढ़ कर सुनाते। मर्या को कहानियाँ बेहद पसंद थी पर सच में तो वह चाहती थी की वह खुद उन कहानियों को पढ़ सके।



"तुम अभी सिर्फ चार साल की हो मर्या," उसके माता पिता ने उसे समझाया।

"अभी तुम पढ़ने के लिए बहुत छोटी हो।"

पर मर्या की बहन ब्रोन्या उससे उम्र में तीन साल बड़ी थी और उसके पास गत्ते से कटे बहुत ही सुन्दर अक्षर थे। ब्रोन्या उनसे शब्द बनाती और कभी-कभी तो ख़ास मर्या के लिए ही शब्द बनाती।

"यह पेड़ है!" मर्या उछलकर जवाब देती।

"बिलकुल इस पेड़ जैसा जिसके नीचे हम बैठे हैं।"

"तुम बहुत जल्दी सीख जाती हो।", ब्रोन्या उसे कहती।

"क्या सच में?", मर्या कहती। "मुझे ख़ुशी है। मुझे सीखने में मज़ा आता है।"



ब्रोन्या मर्या को आसान शब्द तो सिखा सकती थी जैसे “पेड़” और “बिल्ली” और “सेब”। पर वह खुद सात ही साल की थी और लम्बे शब्द बनाने में उसे भी दिक्कत होती थी।

एक शाम, जब वह अपने पिता और मर्या के लिए पढ़ रही थी, तब उसे शब्द बनाने में इतनी परेशानी हुई की वह रुक जाना चाहती थी। “परेशान मत हो ब्रोन्या।”, उसके पिता कहा। “अपना समय लो, धीरे-धीरे पढ़ो तब शब्द खुद ही तुम्हें समझ आ जायेंगे।”





मर्या बहुत ही होशियार और उत्सुक थी। साथ ही बेसब्र भी बहुत थी। उसने झट से ब्रोन्या की किताब पकड़ी और पढ़ना शुरू कर दिया।

“मर्या, मुझे यकीन नहीं हो रहा!”, ब्रोन्या चिल्लाई। “ क्या यह सब तुम्हें मैंने सिखाया है? उन गत्ते के टुकड़ों से?”

मर्या हँसी। “हाँ, शायद तुम्ही ने सिखाया होगा|”, उसने कहा। “कितनी मज़े की बात है। अब मैं खुद पढ़ सकती हूँ।”

उस दिन से मर्या पढ़ने लगी, और उसने किताबों से बहुत सारी बातें सीखीं। उसने अपने आस-पास की दुनिया पर ध्यान देना भी सीखा और साथ ही बहुत सवाल पूछना भी सीखा।

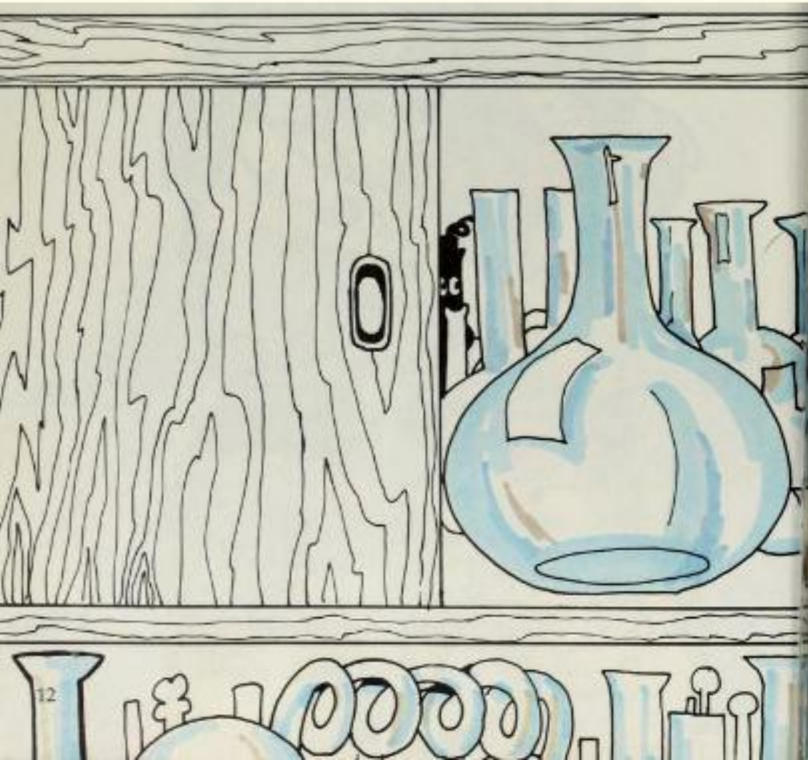
मर्या के पिता विज्ञान के अध्यापक थे। एक दिन मर्या उनकी प्रयोगशाला में गयी और कुर्सी पर खड़े होकर एक अलमारी खोल दी। उस अलमारी में कई तरह की बोतलें और शीशियाँ थीं। "यह सब क्या है?", मर्या ने पूछा।

"यह सब वैज्ञानिकों के काम की चीज़ें हैं।", उसके पिता ने कहा।

"वैज्ञानिक क्या काम करते हैं?", मर्या ने पूछा।

"वह चीज़ों को गहराई से जानने और समझने का काम करते हैं।", उसके पिता ने कहा।

मर्या हँसी। "मुझे भी यह करना बहुत पसंद है। शायद एक दिन मैं भी वैज्ञानिक बन पाऊं," मर्या ने कहा।



एक दिन मर्या प्रयोगशाला में अकेली थी। अचानक उसे लगा जैसे उसने एक आवाज़ सुनी, “मर्या, सुनो तो!”

मर्या ने सर उठाया तो देखा की एक टेस्ट-ट्यूब अलमारी में खड़ी होकर उससे बातें कर रही थी। "मेरा नाम झाग है," टेस्ट-ट्यूब ने कहा, "और मैं तुमसे बात करना चाहती हूँ"। और ऐसा कहते कहते ही वो टेस्ट-ट्यूब अलमारी से बाहर आयी और मर्या के पास आकर खड़ी हो गयी। मर्या जानती थी की टेस्ट-ट्यूब जीवित नहीं हो सकती, पर उसने यह तय किया की वह उसे जीवित ही मानेगी। वह जानती थी की अगर वह झाग से बात करेगी तो असल में वह खुद से ही बात कर रही होगी. जैसा भी हो, उसे लगा की एक टेस्ट-ट्यूब जैसी काल्पनिक दोस्त होने में बहुत मज़ा आएगा।





"मर्या, मुझे ऐसा लगता है की तुम्हे यहाँ प्रयोगशाला में बहुत अच्छा लगता है," झाग ने कहा। "शायद एक दिन तुम भी वैज्ञानिक बनोगी और तुम्हारी खुद की प्रयोगशाला होगी।"

"यह तो बहुत ही अच्छी बात होगी," मर्या ने कहा। "लेकिन बहुत सारे लोग कहते हैं की लड़कियाँ वैज्ञानिक नहीं बन सकतीं।"

"अगर तुम बहुत कुछ सीख जाओगी तब तुम जो करना चाहो कर सकती हो," झाग ने कहा। "इस बात से कोई फरक नहीं पड़ता की तुम लड़का हो या लड़की।"

झाग की कही हुई बातें मर्या को बहुत पसंद आती थीं। इसलिए जब मर्या की उम्र स्कूल जाने लायक हुई तब वह झाग को अपने साथ ही लेकर जाती थी।



उन दिनों पोलैंड देश पर रूस देश का राज हुआ करता था। रुसी लोग यह चाहते थे की पोलैंड देश के लोग रूस का इतिहास सीखें। उन्होंने सभी पोलैंड के लोगों को सिर्फ रुसी भाषा में बात करने का हुक्म दिया। उन्होनें स्कूलों में रुसी सैनिक भेजे यह देखने के लिए की हर स्कूल में पोलैंड देश के इतिहास की जगह रूस देश का इतिहास पढ़ाया जाये।

"कितनी बुरी बात हैं!", झाग ने कहा। "लोगों को अपने देश का इतिहास पढ़ने दिया जाना चाहिए।"

पर पोलैंड के टीचर भी बहुत चालाक थे। मर्या की कक्षा की सभी लड़कियों के पास पोलैंड के इतिहास की किताबें थीं। जब भी इतिहास पढ़ने का समय होता था तो वह अपनी पोलैंड की ही किताबें निकालते थे। एक छोटी लड़की खिड़की से बाहर निगरानी रखती और अगर कोई रुसी सैनिक कक्षा के करीब आता तो वह टीचर को बता देती।

"यह हुई न बात!", झाग ने ख़ुशी से कहा।

मर्या की भी ख़ुशी का ठिकाना न था। पोलैंड का इतिहास पढ़ना मज़ेदार था और रुसी सैनिकों पर निगरानी रखना भी बहुत मज़ेदार था।



एक दिन जो लड़की खिड़की पर निगरानी रखा करती थीं, उसने बाहर सड़क पर किसी के जूतों की ठप! ठप! ठप! सुनी। एक रुसी सैनिक उनके स्कूल की तरफ आ रहा था।

"वो आ रहा है! वो आ रहा है!" वह लड़की चिल्लाई। "वो एक रुसी सैनिक है और वो बस यहाँ पहुँच ही गया।"

"अरे नहीं!", टीचर ने घबरा कर कहा। "जल्दी! जल्दी से अपनी इतिहास की किताबें छुपा दो।"

किताब छुपाने की जगह ढूंढने के लिए कोई लड़की यहाँ भागी तो कोई वहाँ। वे लडख़ड़ाईं, एक दूसरे से टकराईं, और एक लड़की के गिरने की वजह से झाग भी कमरे के दूसरी ओर पहुँच गयी।

"जल्दी! बच्चों जल्दी करो।", टीचर ने कहा।



रुसी सैनिक झट से उनकी कक्षा में घुस गया। उसने छोटी लड़कियों का एक झुण्ड देखा, वह सब शांति से सिलाई-बुनाई कर रही थीं। कुछ लड़कियों की तो सांस भी फूली हुई थी पर उसने इस बात पर ध्यान नहीं दिया।

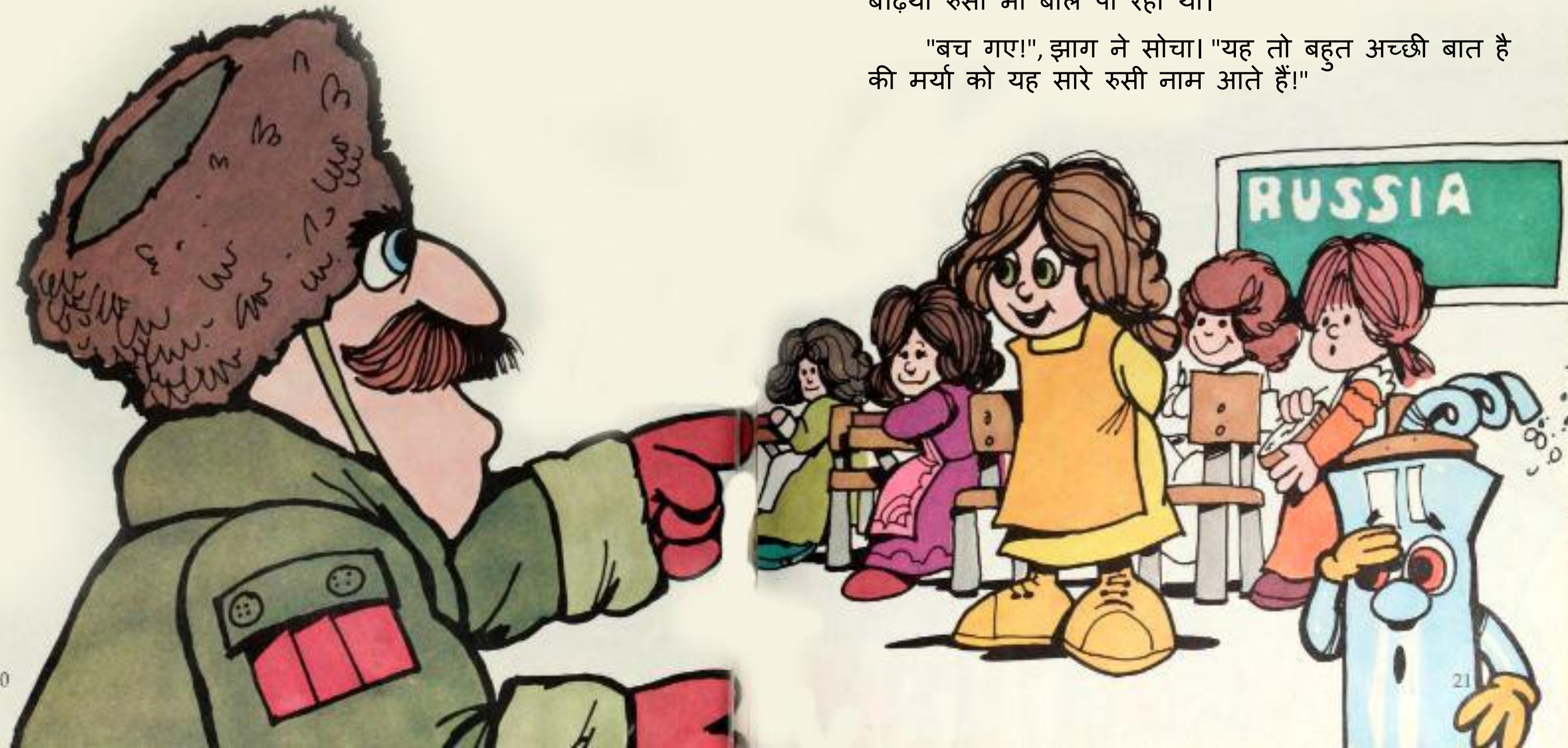
"बहुत अच्छे।", सैनिक ने कहा। वह टीचर की ओर मुड़ा। "टीचर! कक्षा में किसी भी एक लड़की को रूस के सारे राजाओं का नाम बताने को कहो - रुसी में!"

कक्षा में कुछ लड़कियाँ डर के मारे काम्पने लगीं क्योंकि रूस के तो बहुत सारे राजा थे और सबके नाम याद रखना कोई आसान बात न थी। तभी मर्या ने टीचर को उसका नाम पुकारते हुए सुना।

"अरे!", मर्या ने सोचा। "कहीं मैंने कोई गलती कर दी तो!"

मर्या ने राजाओं का नाम बताना शुरू किया, वह भी सबसे पहले राजा से। उसको सभी के नाम मालूम थे और वह बढ़िया रुसी भी बोल पा रही थी।

"बच गए!", झाग ने सोचा। "यह तो बहुत अच्छी बात है की मर्या को यह सारे रुसी नाम आते हैं!"



जब तक मर्या बड़ी कक्षाओं में पहुंची, तब तक उसने रुसी राजाओं के नामों के अलावा और भी बहुत कुछ सीख लिया था। उसे चीज़ें सीखना सच में बहुत पसंद था। १६ वर्ष की उम्र में वह अपनी कक्षा में प्रथम आयी और इसी के साथ उसकी स्कूल की पढ़ाई भी ख़तम हुई।

"वाह! क्या बात है", झाग ने कहा।



मर्या के पिता उसकी सफलता से बहुत ही खुश थे। "तुमने स्कूल में बहुत मेहनत की है", उन्होनें मर्या से कहा। "अब तुम्हें पक्का से इनामें मिलेगा। मैं तुम्हें तुम्हारे चचेरे भाई-बहनों के पास गांव भेज रहा हूँ।"

मर्या को गांव में रहने में खूब मज़ा आया। वह झाग को अपने साथ ले गयी और वह दोनों हरे-भरे खुले मैदानों में घुड़सवारी करते। "मर्या!", झाग ने घोड़े पर खुद को सँभालते हुए बोला। "ज़रा धीरे चलो।"

हर शाम मर्या अपने भाई-बहनों और उनके दोस्तों के साथ पार्टी करती। वह सभी गाते नाचते हुए ख़ुशी से अपनी शाम बिताते। मर्या को इतना मज़ा आता था की वह रात भर बस नाचना ही चाहती थी।

मर्या गांव से जब घर आयी तो उसे पता चला की ब्रोन्या बहुत ही उदास है। "मैं डॉक्टरी की पढ़ाई के लिए पेरिस शहर जाना चाहती हूँ।", ब्रोन्या ने कहा। "पर मैं नहीं जा पाऊँगी। हमारे पास इतने पैसे ही नहीं हैं।"

"अफ़सोस की मुझे मेरी नौकरी से इतना पैसा नहीं मिलता,", उनके पिता ने कहा।

मर्या ने इस बारे में कुछ देर सोचा। फिर उसने अपनी बहन के कन्धों पर हाथ रखा। "हम संभाल लेंगे!", उसने कहा। "मैं नौकरी करूँगी और तुम्हें पैसे भेज दूंगी।"

"तुम?", ब्रोन्या ने कहा। "पर....पर तुम कर ही क्या सकती हो?"

"मैं छोटे बच्चों को संभाल और पढ़ा सकती हूँ", मर्या ने कहा।

"पर तुम तो खुद कॉलेज जाना चाहती हो!", ब्रोन्या परेशान होने लगी।

"हाँ, और मैं जाउंगी भी।", मर्या ने तय कर लिया। "मैं तुम्हें पैसे भेजूंगी जब तक तुम्हारी पढ़ाई पूरी नहीं हो जाती। उसके बाद जब तुम डॉक्टर बन जाओ, तब तुम मेरी मदद कर सकती हो।"





मर्या को वॉरसॉ से दूर एक बहुत ही अच्छे परिवार के साथ नौकरी मिल गयी। उसे पढ़ाने में मज़ा आता और बच्चे भी उसे बहुत पसंद करते थे। वह उनके साथ छुपन-छुपाई खेलती और उन्हें खूब हंसाती।

झाग भी उसके साथ ही गई, और उसे हमेशा याद दिलाती रही की उसे भी एक दिन कॉलेज जाकर वैज्ञानिक बनना है। इस लिए जब भी उसे खाली समय मिलता, तो मर्या पढ़ती, लिखती और सीखती।

पांच साल के लम्बे सब्र के बाद, मर्या को अपने पिता से एक बेहद ख़ास चिट्ठी मिली। "मेरी प्यारी मर्या," चिट्ठी में लिखा था। "मेरी अब एक नयी नौकरी लग गयी है और मैं पैसे भी काफी अच्छे कमा पा रहा हूँ। अब मैं ब्रोन्या को उसकी पढ़ाई के लिए पैसे भेज सकता हूँ, तुम्हें यह नौकरी करने की आवश्यकता नहीं है। जल्दी से घर आ जाओ, मुझे तुम्हारी बहुत याद आती है।"

"अरे झाग!", मर्या ख़ुशी से चहकी। "कितनी अच्छी बात है ना! अब मैं घर जा सकती हूँ, अपने पिता को फिर से देख सकती हूँ। और लगता है की अब मेरी कॉलेज जाने की बारी है।"



जब मर्या घर पहुंची, वह अपने पिता की तरफ दौड़ी और उनके गले लग गयी। "आखिरकार मैं आ ही गई!", मर्या रोइ। "कितना लम्बा समय हो गया है।"

"मुझे बहुत ख़ुशी है की तुम वापिस आ गयी मर्या।", उसके पिता ने कहा। "यह घर तुम्हारे बिना बहुत ही सूना था।"

मर्या चाहती थी की जब तक उसकी कॉलेज जाने की बारी नहीं आती, तब तक वह पढ़ती और सीखती रहे। पर उस समय पोलैंड के लोगों के लिए स्कूल के बाद अपनी पढ़ाई जारी रखना बहुत ही कठिन था। रूसी लोगों को लगता था की अगर पोलैंड के लोगों का पढ़ना-सीखना बंद करवा दें, तो रूस पोलैंड पर और अच्छे से राज कर पायेगा। जो लोग पढ़ना चाहते थे, उन्हें रूसियों से छुपकर पढ़ना होता था।

मर्या के कुछ दोस्त बन गए जो पढ़ना चाहते थे। हर शाम वह एक दूसरे के घर मिलते और साथ पढ़ाई करते। उनमें से कोई भी कुछ नया सीखता तो सबसे बांटता। पर उन्हें अपने मिलने की जगह बदलते रहनी पड़ती थी ताकि किसी को पता न चले की वह क्या कर रहे हैं। अगर किसी को भी पता चलता, तो यह बहुत ही खतरनाक बात होती।



मर्या कुछ महीनों तक ऐसे ही पढ़ी। फिर एक दिन पेरिस शहर से एक चिट्ठी आयी। "ब्रोन्या की चिट्ठी है!", मर्या ख़ुशी से चिल्लाई। "उसकी डॉक्टरी की पढ़ाई पूरी हो गयी है और वो चाहती है की मैं उसके और उसके पति काश्मीर के साथ आकर पेरिस में रहूं। आखिरकार अब मैं कॉलेज जा सकती हूँ।"

"मैं तुम्हारे लिए बहुत खुश हूँ मर्या!", उसके पिता ने कहा। "तुम सच में एक वैज्ञानिक बनने लायक हो।"



"क्या तुम्हें ख़ुशी नहीं है की तुमने अपनी पढ़ाई जारी रखी?", झाग ने पूछा। "अब तुम वो कर सकती हो जो तुम हमेशा से करना चाहती थी।"

मर्या सच में खुश थी। "मेरा पढ़ना सच में काम आ गया।", उसने झाग से हँस कर कहा।

"मुझे पता है की अब खूब मेहनत करनी पड़ेगी पर मैं तैयार हूँ।", मर्या ने कहा। वह अपना सामान बाँधने ऊपर भागी।

"मेहनत करके नई चीज़ें सीखने में मज़ा आता है और कल को जब मैं वैज्ञानिक बन जाउंगी और किसी चीज़ की खोज करूँगी तो उससे लोगों की मदद भी हो सकती है।"

"सपने बुनना बंद करो और जल्दी करो", झाग ने उसे समझाया। "ध्यान नहीं दोगी तो तुम्हारी ट्रैन छूट जाएगी।"

मर्या ने जल्दी से अपना सामान बाँधा और फिर वह और उसके पिता रेलवे स्टेशन के लिए घर से चल दिए।

अचानक ही मर्या को बेहद अकेला महसूस हुआ। "मुझे आपकी बहुत याद आएगी पिताजी।", वह रोई।



"और मुझे तुम्हारी याद आएगी मर्या।", उसके पिता ने उससे कहा। "मगर अब तुम्हें जाना होगा। तुमने अपनी बहन को डॉक्टर बनने का मौका दिया। अब तुम्हे मौका मिला है एक वैज्ञानिक बनने का।"

मर्या और झाग ट्रैन पर चढ़ गए और धीरे-धीरे छुक-छुक करते उनकी ट्रैन वॉरसॉ से मीलों दूर पेरिस की ओर चल दी।

जब तक मर्या पेरिस पहुंची वह बिलकुल भी उदास नहीं थी। बल्कि वह अब बेहद खुश और उत्सुक थी। ब्रोन्या और काश्मीर उससे मिलने के लिए पेरिस के रेलवे स्टेशन पर उसका इंतज़ार कर रहे थे। मर्या की इतनी उत्सुकता देख कर वह हँसने लगे।

"चलो हम सीधा ही सोरबोन कॉलेज चलते हैं।", मर्या ने कहा।

"क्या तुम पहले हमारे घर भी नहीं जाना चाहती?", ब्रोन्या ने पूछा।



मर्या नहीं चाहती थी। सोरबोन दुनिया के सबसे अच्छे और बड़े कॉलेजों में से एक था, और एक ऐसा कॉलेज जो लड़कियों को दाखिला देता था। उन दिनों लड़कियों का कॉलेज जाना आम बात नहीं थी। मर्या अब सोरबोन को देखने के लिए और सब्र नहीं कर सकती थी। और जब उसने कॉलेज में अपना दाखिला करा लिया, उसने यह तय किया की अब वह मर्या नाम का प्रयोग नहीं करेगी। "अब मैं पेरिस में हूँ! और फ्रेंच में मर्या को मैरी कहते हैं।", उसने कहा। और उस दिन से सब उसे मैरी पुकारने लगे।

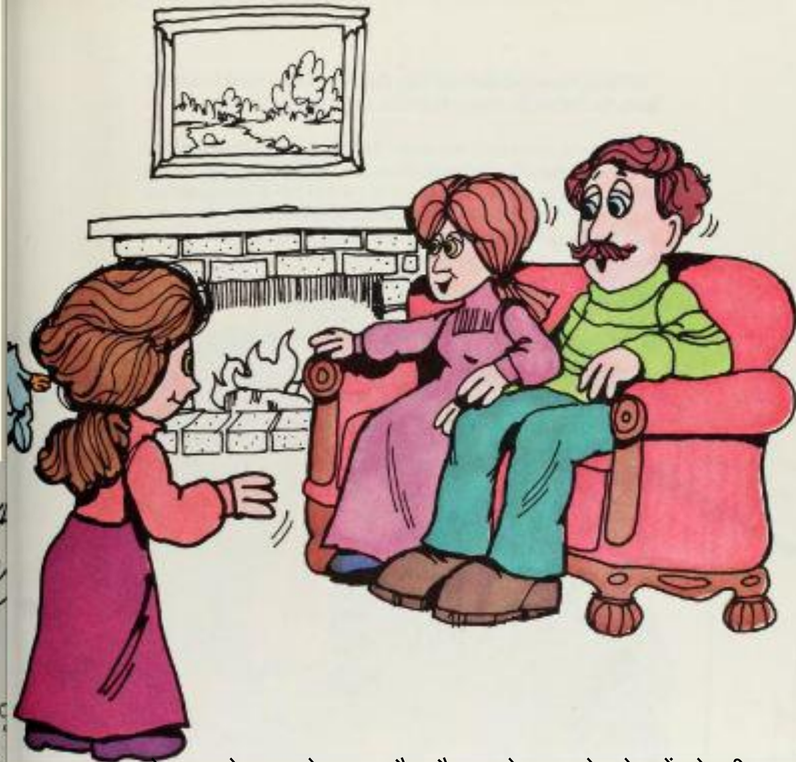
शुरुआत में मैरी ब्रोन्या और काश्मीर के साथ बहुत खुश थी। पर जब उसकी पढ़ाई शुरू हो गयी तब उसे थोड़ी दिक्कत होने लगी।

"मेरी प्यारी झाग!", मैरी ने कहा। "ब्रोन्या और काश्मीर बहुत ही अच्छे लोग हैं। पर उनके इतने सारे दोस्त हैं जो उनसे मिलने आते है, गाना बजाते है और खूब बतियाते हैं। इस सब के बीच मेरी पढ़ाई कैसे होगी?"

"हाँ मुझे भी यही लगता है की ऐसे में पढ़ाई नहीं हो पायेगी।", झाग ने सोचा।

तो मैरी ब्रोन्या और काश्मीर से बात करने गयी।





"मुझे तुम्हारे घर से प्यार है और मुझे तुम्हारे दोस्तों से भी प्यार है।", मैरी ने समझाना शुरू किया। "तुम इतने अच्छे लोगों को जानते हो। जब मैं पढ़ नहीं रही होती, तब मुझे उनकी बातों का बड़ा मज़ा आता है। पर जब पढ़ने की बारी आती है, तो मैं अच्छे से ध्यान नहीं लगा पाती। मुझे लगता है की मुझे अपने कॉलेज के पास ही एक छोटा कमरा किराये पर ले लेना चाहिए। ऐसे में मैं पुस्तकालय और प्रयोगशाला के भी करीब हो जाऊँगी।"

"हम तुम्हें समझ सकते हैं मैरी।", ब्रोन्या ने कहा। "हमें तुम्हारा यहाँ रहना बहुत पसंद है, पर तुम ठीक कह रही हो। तुम्हें एक शांत जगह की ज़रूरत है।"

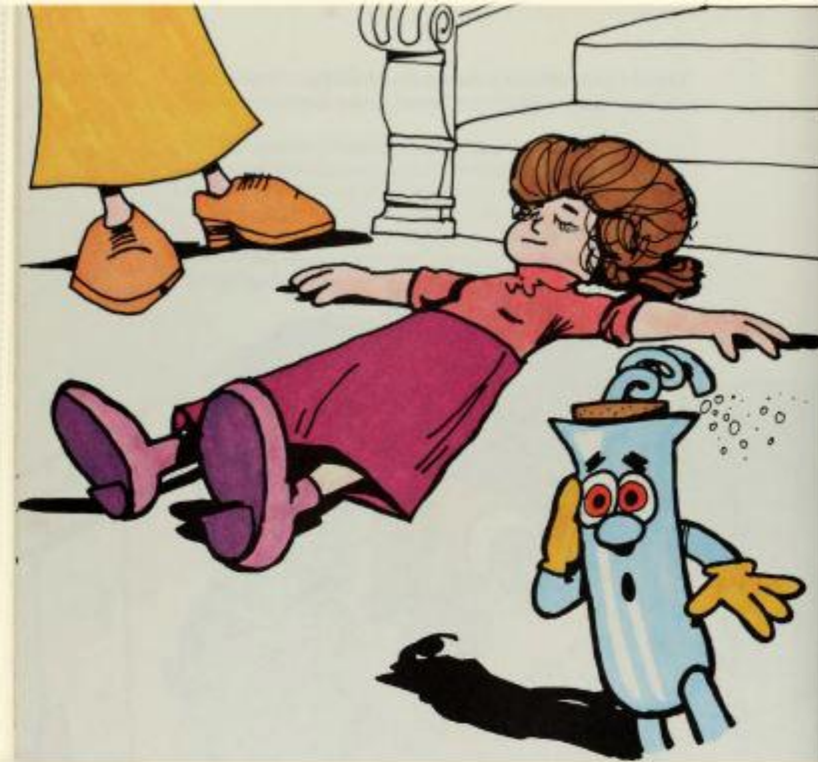
"मुझे लगता है तुम्हारी इस नई जगह में रहने में ही भलाई है।", झाग ने कहा जब मैरी को कॉलेज के पास एक छोटा कमरा मिल गया।

पर जैसे जैसे समय बीतता गया, झाग का भी इस बात पर भरोसा कम होने लगा। मैरी तेल की बचत करना चाहती थी, इसलिए वह हर शाम कॉलेज के पुस्तकालय में ही पढ़ती। और जब रात दस बजे वो बंद हो जाता था तो मैरी रात भर अपने ठन्डे कमरे में पढ़ाई करती। वह तभी सोती जब ठण्ड के मारे उसके हाथ कलम को नहीं पकड़ पाते और न ही उसकी आँखें खुली रह पाती।



"मैरी, तुम्हें थोड़ा ज़्यादा आराम करना चाहिए।", झाग ने उसे समझाया। "और थोड़ा ज़्यादा खाना भी खाना चाहिए नहीं तो तुम्हारी सेहत बिगड़ जाएगी।"

मैरी इस बात पर हँस दी और उसने झाग से कहा की उसके पास खाने और सोने के बारे में सोचने का समय नहीं है। "इतना कुछ है यहाँ सीखने को!", मैरी ने कहा।



पर एक शाम जब मैरी सोरबोन से लौटी तो उसे काफी चक्कर आया। उसने अपने कमरे की सीढ़ियां चढ़ने की कोशिश करी पर उससे चढ़ी नहीं गईं । वह बेहोश हो गयी और ज़मीन पर गिर गई ।

"अरे बाप रे!", झाग घबरा का बोली। "मुझे इसी का डर था।"

झाग को बहुत सुकून मिला जब उसी समय मैरी की एक दोस्त मैरी से मिलने उसके कमरे में आई।

मैरी की दोस्त ने काश्मीर को सन्देश भेजा। वह मैरी को इतना कमज़ोर और बीमार देखकर बहुत दुखी हुआ। "मैरी! ज़रा देखो तो अपने आप को, कितनी कमज़ोर हो गयी हो।", वह परेशान हो कर बोला। "तुम अपना बिलकुल ख्याल नहीं रख रही और खाना क्या कहती हो?"

"पता नहीं क्या हुआ मुझे", मैरी बोली। "शायद आज मैंने कुछ गाजर और चुकुन्दर खाये थे।"

"और मुझे लगता है की तुम रात भर जगी रहती हो पढ़ने के लिए?", काश्मीर ने पूछा।

मैरी ने सर झुकाकर हाँ में जवाब दिया।

"अपना कोट पहनो।", काश्मीर बोला। "तुम मेरे साथ घर चलो।"



"मुझे उम्मीद है की अब तुमनें अपना सबक सीख लिया है।", झाग बोला। मैरी अब ब्रोन्या के घर आराम से रह रही थी और अच्छा खाना भी खा रही थी।

मैरी हँसी। "मैं सच में अच्छे खाने का स्वाद भूल गयी थी।", उसने कहा। "तुम सही कहती थी झाग। यह मेरी लापरवाही थी की मैंने अपना ख्याल नहीं रखा। मुझे न चीज़ें सीखने का कोई फायदा नहीं होगा अगर मेरी सेहत अच्छी नहीं रही तो।"

"हाँ, और अब यह बात हमेशा याद रखना।", झाग ने कहा।





मैरी जल्द ही ठीक हो गई पर बीमारी के बुरे समय को वह भूल नहीं पाई। उसने अपना ख्याल रखना सीखा और सब्र के साथ काम लेना भी। "वैज्ञानिक बनने के लिए बहुत कुछ करने की ज़रूरत है। मैं सब कुछ एक रात में नहीं कर पाऊँगी।"

वह कॉलेज की प्रयोगशाला में भी काम करने लगी। उसे उस जगह से बहुत प्यार था। जब लोग खूब मन लगाकर काम करते, तो एक अलग तरह की शांति मैरी महसूस कर पाती थी। यह शान्ति उसे अच्छी लगती थी। उसको प्रयोगशाला में मौजूद सारी वस्तुएं और चमकती हुई टेस्ट ट्यूब्स से भी बहुत प्यार था।

झाग बिलकुल सही थी। मैरी ने इतने अच्छे से परीक्षा में लिखा था की अपनी कक्षा में वह प्रथम आई।

"झाग! देखो! अब मैं सच में एक वैज्ञानिक हूँ। मेरी सारी मेहनत आख़िरकार काम आ ही गई।", मैरी ख़ुशी से चिल्लाते हुए बोली।

"हाँ! सच में बहुत मेहनत लगी।", झाग बोली। "पर मज़ा भी तो कितना आया।"

"बिलकुल!", मैरी ने कहा। "और आगे अभी भी बहुत काम बाकी है - और मज़ा भी - क्योंकि मैं कितना भी सीख लूँ, आगे नया सीखने को बहुत कुछ है।"



काफी सालों तक प्रयोगशाला में काम करके और कॉलेज में खूब सारे लेक्चरों में बैठकर मैरी विज्ञान की दुनिया के बारे में बहुत कुछ सीख गई थी। और अब उसकी आखरी परीक्षा का समय भी आ गया था। इस परीक्षा में सफल होकर मैरी भी एक वैज्ञानिक बन जाती। "मुझे तो बहुत डर लग रहा है। ऐसा लग रहा है जैसे की मुझे कुछ याद ही नहीं।" मैरी ने कहा।

"तुम परेशान मत हो।", झाग ने उसे समझाया। "तुम परीक्षा में अच्छा ही करोगी।"



बहुत जल्द बहुत से लोग वैज्ञानिक कामों के लिए मैरी के पास आने लगे। एक दिन एक दोस्त जो प्रोफेसर था, मैरी से मिलने उसकी छोटी सी प्रयोगशाला में आया। उसने देखा की मैरी बहुत ही दुखी और परेशान है।

"क्या हुआ मैरी?”, उसके दोस्त ने पूछा।

"मेरे पास लोग इतने दिलचस्प काम लेकर आ रहे है,“ मैरी ने उन्हें बताया। "पर मेरे पास वह काम करने के लिए सही उपकरण नहीं है और अगर हैं भी तो प्रयोगशाला में इतनी जगह नहीं है की उन्हें इस्तेमाल किया जा सके।"

"हाँ।", उस दोस्त ने कहा। "यहाँ सच में बहुत कम जगह है, और कोई भी नया सामान आया तो दिक्कत हो जाएगी। मैं किसी को जानता हूँ जो तुम्हारी मदद कर पाएँ।"

"सच में तुम जानते हो?", मर्या ने कहा। "यह तो बहुत ही अच्छी बात है।"



उसके जल्द बाद, मैरी को प्रोफेसर के घर एक जाने माने वैज्ञानिक पिअर क्यूरी से मिलने का न्योता आया। मैरी इतने मशहूर वैज्ञानिक से मिलने में थोड़ा शर्मा रही थी, पर वह उन्हें बहुत पसंद करती थी। और पिअर भी मैरी के काम के प्रशंसक थे। वह उसके ज्ञान और उत्सुकता को बहुत ही सराहते थे।

"कितनी ही आकर्षक और मन लगाकर काम करने वाली लड़की है मैरी।", पिअर ने सोचा।

फिर प्रोफेसर ने पिअर को मैरी की छोटी प्रयोगशाला के बारे में बताया। "यह कुछ ज़रूरी काम कर रही है पर दिक्कत यह है कि इसकी प्रयोगशाला में न तो सारे उपकरण है न ही उन्हें रखने की जगह।"

जब पिअर ने यह सुना तो उन्होनें जल्द ही मैरी को अपनी प्रयोगशाला में आकर काम करने को कहा। "मुझे बहुत ख़ुशी होगी ऐसा करने में।"

"मैं आपको बिलकुल भी परेशान नहीं करूँगी।", मैरी ने कहा।

"हाँ मुझे पता है।", पिअर ने हँस कर जवाब दिया।

"मुझे पिअर पसंद है।", झाग ने सोचा।





मैरी आवश्यक काम करने की लिए ज़्यादा जगह की सुविधा से बहुत ही संतुष्ट थी। पिअर भी खुश थे की वह मैरी की मदद कर पाए। हर सुबह वह जब अपनी प्रयोगशाला आते तो उन्हें मैरी को काम करते हुए देखना पसंद था।

मैरी पिअर को बस कुछ महीनों के लिए ही जानती थी जब पिअर ने उससे शादी करने के लिए पुछा। "मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ।", उन्होनें कहा। "मैं हमेशा तुम्हारे साथ ही रहना चाहता हूँ।"

मैरी भी यह सुनकर बहुत खुश हुई पर थोड़ा सा परेशान भी हुई। "मैं भी तुमसे प्यार करती हूँ और साथ रहना चाहती हूँ पर कभी कभी मुझे लगता है की मुझे वापस अपने देश पोलैंड लौट जाना चाहिए।"

पिअर ने उसकी बात समझी। "हाँ मैं जानता हूँ की तुम कभी कभी अपने घर को बहुत ही याद करती हो।" उन्होनें कहा। "पर पोलैंड में अब रूस देश का राज है। वहां तुम्हें अपना काम करने की इज़ाज़त नहीं मिलेगी।"

तुम्हें क्या लगता है मैरी ने फिर क्या कहा होगा?





उसने कहा की वह पिअर से शादी करेगी।

उनकी शादी उनके मिलने के एक साल बाद हुई। अपनी शादी के दिन वह दोनों बहुत ही खुश थे। एक दूसरे के साथ ज़िन्दगी बिताने के लिए वह काफी उत्सुक थे। साथ रहना, अपना ज्ञान बाँटना और साथ काम करना।

झाग भी बहुत बहुत खुश थी।

मैरी और पिअर वाकई साथ में बहुत ख़ुशी से रहे। शादी के बाद वह छुटियाँ मनाने साइकिल पर सवार पेरिस शहर की भाग-दौड़ से दूर एक शांत जगह पर गए। कभी वह किसी बगीचे में बैठ कर खाना खाते तो कभी अपने कमरे के लिए जंगली फूल इकठ्ठा करते। उन्हें साथ रहने में बड़ा मज़ा आ रहा था।

छुट्टी से लौट कर वह दोनों काम पर वापस गए। आखिरकार प्रयोगशाला में बहुत कुछ था नया जो था खोजने को। वह अपना बहुत समय वहां बिताने लगे। फिर कुछ ऐसा हुआ जिससे उनकी ज़िन्दगी में और खुशियाँ आईं। मैरी ने एक बच्ची को जन्म दिया।

"यह कितनी सुन्दर है!", मैरी ने अपनी बेटी को देखते हुए कहा।

"यह बिलकुल तुम्हारी तरह दिखती है!", पिअर ने कहा। मैरी मुस्कुराई।

"हम इसे ईरीन पुकारेंगे।", मैरी ने कहा। पिअर मान गए।

मैरी को माँ बनना और वैज्ञानिक बनना दोनों ही काम बहुत पसंद थे। और वह दोनों ही काम बहुत अच्छे से करती।

उन दिनों फोटोग्राफ में इस्तेमाल होने वाली काँच की चपटी प्लेटों को काले कागज़ में लपेट कर रखा जाता था तांकि सूरज की किरणे पड़ने पर उनपर सफ़ेद धब्बे न बन जाएं। मैरी को पता चला की किसी वैज्ञानिक ने ऐसी ही लिपटी हुई फोटोग्राफ की प्लेट के पास कुछ पत्थर रख दिए थे पर फिर भी उन प्लेटों पर काले धब्बे बन गए थे। इसका मतलब था की वो पत्थर कोई ऐसी किरणें छोड़ रहे थे जो हमें दिखाई नहीं देती पर वह इतनी शक्तिशाली होती हैं की वह काले कागज़ को भी पार कर जाती हैं। वैज्ञानिक इनको एक्स-रेज़ कहते हैं। "न जाने वो क्या चीज़ है इन पत्थरों में जिसके कारण ऐसा हो रहा है।" मैरी ने सोचा।



पिअर की मदद से मैरी इन पत्थरों को और गहराई से समझने लगी। उसने फिर कुछ और पत्थरों की भी पढ़ाई करी और जाना की एक और ऐसा पत्थर है जो न दिखाई देने वाली किरणें छोड़ता है। इस पत्थर को कहते थे पिचब्लेंड। यह काला और बहुत ही सख्त था।

"इस पत्थर में कोई तो ऐसी चीज़ होगी जिसके बारे में हम नहीं जानते।", मैरी ने कहा। "सिर्फ एक पत्थर में उस चीज़ की मात्रा बहुत ही काम होगी, मुझे और पिचब्लेंड पत्थर चाहिए होंगे तांकि उन्हें अच्छे से उबालने पर मैं उस अंजान चीज़ का पता लगा सकूँ। पत्थरों को उबालने से शायद वह चीज़ एक साथ इकठी हो जाये और मैं उन किरणों को भी देख पाऊँ।"

"पर पिचब्लेंड तो बहुत ही महंगा होता है।", पिअर ने कहा। "तुम इतना सारा पिचब्लेंड कहाँ से लाओगी?"

मैरी की किस्मत अच्छी थी। ऑस्ट्रिया देश के राजा को मैरी के काम के बारे जब पता चला, तब उन्होनें मैरी को ढ़ेर सारा पिचब्लेंड उपहार में भेजा। फिर मैरी और पिअर ने एक बड़ा सा बर्तन लेकर पिचब्लेंड पत्थर को थोड़ा-थोड़ा करके उबालना शुरू किया। हर बार ऐसा होता की ज़्यादा से ज़्यादा पत्थर पिंघल जाता और बस थोड़ा सा ही पत्थर ठोस बचा रहता।



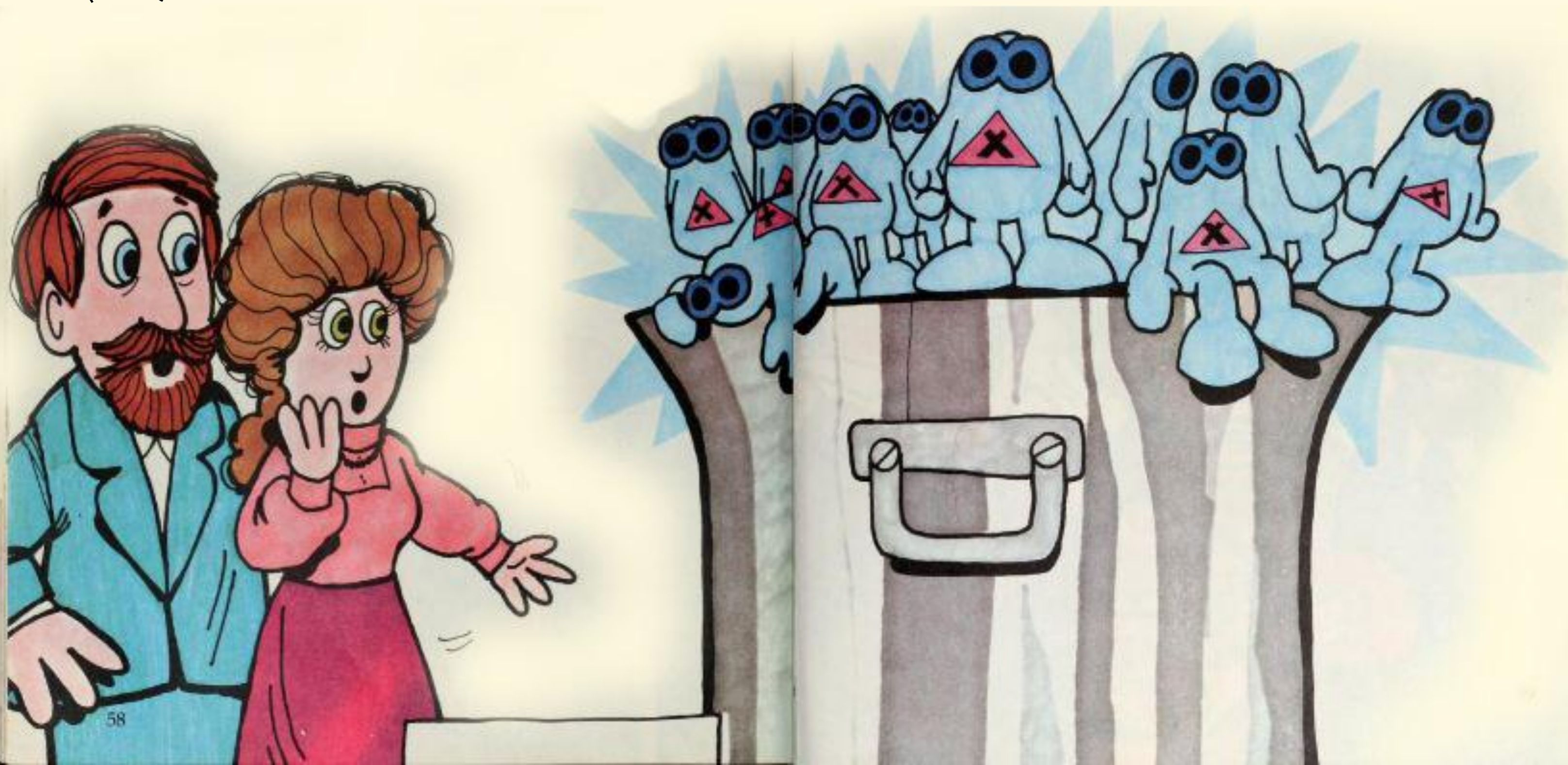
एक दिन, यह प्रयोग शुरू होने के करीब दो साल बाद, मैरी और पिअर पत्थरों को देखने अपनी प्रयोगशाला में गए।

"पिअर! देखो!", मैरी ने कहा।

उन्होनें देखा की उस बर्तन में से बहुत ही सुन्दर जगमगाती हुई नीले रंग की चमक थी। आखिरकार उन्होनें इतना पिचब्लेंड उबाल लिया था जिससे किरणें देने वाली चीज़ ज़्यादा मात्रा में एक साथ इकठी हो गयी थी।

"बहुत ही बढ़िया।", पिअर ने कहा। "अब सारी दुनिया यह किरणें देख पाएगी। यह किरणें जो सबको पता तो है की हैं पर कभी किसी ने इन्हें देखा नहीं है।"

मैरी ने उस अनजान चीज़, जिससे यह नीली किरणें निकल रहीं थीं, उसका नाम रेडियम रखा।



जिस रेडियम की खोज मैरी और पिअर ने की थी, वह असल में एक रसायिनिक तत्व था और ऐसी चीज़ों की खोज करना बहुत ही मुश्किल काम है। एक नए तत्व की खोज करना एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात है क्योंकि तत्व ही वो चीज़ें होतीं हैं जिनसे हमारी पूरी दुनिया बनी है।

मैरी और पिअर को अपने काम के लिए बहुत से इनाम मिले। लेकिन उन सभी इनामों में एक इनाम उनके लिए बहुत ख़ास था। वह था भौतिकी का नोबेल पुरूस्कार जो की उन्हें नॉर्वे देश के राजा ने दिया था।





अलग अलग इनामों से तो उन्हें ख़ुशी मिली ही, पर ज़्यादा ख़ुशी इस बात से मिली की रेडियम एक बहुत ही काम आने वाला तत्व था। रेडियम से निकलने वाली किरणों से वैज्ञानिक वस्तुओं के अंदर देख पाए, और सिर्फ वस्तुएं ही नहीं बल्कि लोगों के अंदर भी देख पाए। रेडियम से यह पता लग जाता था की कोई हीरा असली है या नकली। और इसी तत्व की मदद से कई प्रकार के रोगों का भी इलाज हुआ। मैरी की इस खोज से बहुत सारी जानें बच गयी।

मैरी को सीखना बहुत ही पसंद था, इसीलिए वह अपने लक्ष्य तक पहुँच पायी। वह एक काबिल वैज्ञानिक बनी और बहुत सारे लोगों की मदद भी कर पायी। अगर तुम भी चाहते हो की अपने जीवन का लक्ष्य तुम खुद तय करो, तो उस लक्ष्य को पाने में, सीखने की चाहत और उत्सुकता रखना, तुम्हारी भी खूब मदद करेगा।



ऐतिहासिक तथ्य



मैरी क्यूरी ने मर्या स्क्लोडोव्स्का नाम से पोलैंड देश के वॉरसॉ शहर में नवम्बर ७, १८६७ को जन्म लिया था। मर्या के जन्म से लगभग १०० साल पहले पोलैंड देश को उसके शक्तिशाली पड़ोसी देशों ने कब्ज़ा कर जर्मन, रुसी और ऑस्ट्रिया भागों में बाँट दिया था। मैरी का जन्म पोलैंड के रुसी भाग में हुआ। पोलैंड के निवासियों के विद्रोह के कारण रुसी, पोलैंड की संस्कृति का नामों-निशाँ मिटा देना चाहते थे - वहां का धर्म, किताबें, अखबार, और यहाँ तक की वहाँ की राष्ट्रीय भाषा भी। जब मर्या छोटी थी, तो जो लोग नई पीढ़ी को पोलैंड की भाषा और संस्कृति सिखाते, उन्हें ही असली वीर माना जाता था।

बचपन से ही मर्या अपनी ज़बरदस्त स्मरणशक्ति की लिए जानी जाती थी। उसने चार साल की उम्र में ही पढ़ना सीख लिया। उसके सात साल बाद, उसकी माँ का ट्यूबरकुलोसिस के कारण देहांत हो गया और उसके पिता को अकेले ही चार बच्चों का पालन-पोषण करना पड़ा। वह गणित और भौतिकी के प्रोफेसर थे। और वह अपने घर में एक शीशे के बक्से में बहुत से वैज्ञानिक उपकरण रखते - ट्यूब्स, एलेक्ट्रोस्कोप, स्केल्स। मर्या इन सबसे बहुत ही आकर्षित होती और बड़ा होकर एक वैज्ञानिक बनने की उम्मीद करती।*

मर्या की पढ़ाई रुसी स्कूलों में पोलैंड के अध्यापकों द्वारा हुई। वह सब उसे एक बहुत ही बुद्धिमान लड़की मानते थे। उसने १६ साल की उम्र में प्रथम पद से अपनी स्कूल की पढ़ाई पूरी करी। पर उनके घर की आर्थिक व्यवस्था कमज़ोर होने के कारण वह एक दम कॉलेज नहीं जा पायी, बल्कि अपनी बहिन को पेरिस शहर के सोरबोन विश्वविद्यालय में दाखिला दिलाने के लिए उसने काफी साल नौकरी भी करी। १८८१ में मर्या को सोरबोन में विज्ञान विभाग में दाखिला मिला और तब उसने अपना नाम मर्या से बदल कर मैरी कर लिया।

सब कुछ सीख लेने की उत्सुकता रखने वाली मैरी रात भर पढ़ाई करती और हफ्तों हफ़्तों तक सिर्फ ब्रेड, मखन, चाय और फलों से काम चलाती। उसे १८९३ में फिजिकल साइंसेज का लाइसेंस मिला और वह अपनी कक्षा में प्रथम आई। और फिर १८९४ में कक्षा में द्वित्य के साथ उसे मैथमेटिकल साइंसेज का लाइसेंस मिला। उसी साल की शुरुआत में उसकी मुलाकात फ्रेंच वैज्ञानिक पिअर क्यूरी से हुई। उनकी शादी में एक दूसरे के प्रति बेहद प्यार और लगाव था और साथ ही साथ एक वैज्ञानिक साझेदारी भी जिसके कारण आगे जाकर उनकी सफलता को पूरी दुनिया से मान्यता और पहचान मिली। उनकी दोनों बेटियों के जन्म (ईरीन, १८९७ और ईव, १९०४) से भी मैरी के काम में कोई रुकावट नहीं आई। उसने माँ और वैज्ञानिक बनने की ठानी हुई थी और वह दोनों ही कामों में सफल हुई।

सन १८९६ में वैज्ञानिक हेनरी बेकुएरेल ने यह खोज करी की यूरेनियम लवण एक्स-रेज़ छोड़ते थे। पिअर और मैरी ने यूरेनियम लवण की इस हरकत की जांच करी और फिर यह जानने के लिए की यूरेनियम के अलावा भी कोई तत्व ऐसी प्रक्रिया करते हैं या नहीं, इस प्रक्रिया को रेडियमधमिता का नाम दिया। सन १९०३ में मैरी को डॉक्टरेट की उपाधि मिली। उसी साल रेडियमधमिता और यूरेनियम से जुड़े अपने काम के लिए मैरी, पिअर और हेनरी को नोबेल पुरूस्कार से सम्मानित किया गया।

सन १९०६ में पिअर की एक सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गयी। मैरी ने फिर अपना सारा समय काम को समर्पित कर दिया और पिअर के बाद सोरबोन की भौतिकी प्रयोगशाला की निदेशक बनी। वह वहां पर पढ़ाने वाली पहली औरत थी।

सन १९११ में, स्वीडिश अकादमी ऑफ़ साइंसेज ने मैरी क्यूरी को यूरेनियम और पुलोनियम की खोज के लिए रसायन विज्ञान में नोबेल पुरूस्कार दिया। दुनिया में सिर्फ वह ही थीं जिन्हें भौतिकी और रसायन विज्ञान दोनों में ही नोबेल पुरूस्कार मिला।

मैरी की मृत्यु ४ जुलाई, १९३४ में घातक रक्तहीनता के कारण हुई। माना जाता है की यह बीमारी उन्हें रेडिओधर्मी किरणों के अधिक अनावरण से हुई। उन्होनें विज्ञान की दुनिया में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान दिए और आज भी वैज्ञानिक उनके किये गए काम से प्रेरणा पातें हैं।